

औषधीय पौधों की पौध सामग्री एवं रोपण तकनीकी से लाभ

राकेश कुमार उपाध्याय¹, जे0 आर0 बहल² एवं एस0 के0 तिवारी³
 वैज्ञानिक सी0एस0आई0आर0-केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान, अनुसंधान केन्द्र
 पन्तनगर, उधम सिंह नगर-262405, उत्तराखण्ड, भारत
¹वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीमैप, लखनऊ-226015, उ0प्र0, भारत
²वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, एन0बी0आर0आई0, लखनऊ-226001, उ0प्र0, भारत
 rkupadhyaifzd@yahoo.com

प्राप्त तिथि-27.04.2015, स्वीकृत तिथि-19.06.2015

सामान्य परिचय

मानव प्राचीन काल से ही औषधीय पौधों पर निर्भर रहा है, आज भी है, और भविष्य में भी रहेगा। क्योंकि जो भी औषधि रसायनिक तत्व हैं, वो इन्हीं औषधीय पेड़-पौधों से प्राप्त होता है। औषधीय पौधों की खेती में, वर्तमान परम्परागत कृषि फसलों से अधिक लाभ प्राप्त होता है। वर्तमान समय में परम्परागत कृषि कम लाभकारी हो रही है, जिससे किसानों का खेती से मोह भंग हो रहा है। अतः इस वर्तमान दौर में किसान औषधीय पौधों की खेती को अपना करके अधिक लाभ प्राप्त करके अपनी आर्थिक दशा में और सुधार ला सकते हैं। जिस तरह किसी मकान की मजबूती उसकी नीव पर निर्भर करती है, ठीक उसी तरह सफल औषधीय पौधों की खेती, उसकी पौध सामग्री, रोपण एवं सस्य तकनीक पर निर्भर करती है। जिसका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया गया है।

औषधीय पौधों की सार्थकता

औषधीय गुण, रोगाणु से लड़ने की क्षमता, पाचन में लाभकारी, प्रतिरोधक क्षमता, स्वस्थता प्रदान करना, निरोगता प्रदान करना, कृप्रभाव रहित, प्रभावकारी।

औषधीय पौधों की पौध सामग्री- औषधीय पौधों की पौध सामग्री पौधे के विभिन्न भागों द्वारा तैयार की जाती है, जैसे-बीज, तना आदि जो कि निम्नलिखित है:

1. **बीज:** अश्वगन्धा, कालमेघ, सतावर, सर्पगन्धा, तुलसी आदि की पौध इसके बीज द्वारा तैयार की जाती है।
2. **कलिका:** जिरेनियम आदि की पौध कलिका की कटिंग द्वारा की जाती है।
3. **तना:** सर्पगन्ध, लवेण्डर, रोजमैरी आदि की पौध तना की कटिंग द्वारा तैयार की जाती है।
4. **जड़:** मेन्था की पौध सामग्री मुख्यतः जड़ से तैयार की जाती है।
5. **स्लिप:** नीबू घास, एलोवेरा आदि की पौध स्लिप द्वारा तैयार होती है।

रोपड़ से लाभ

1. **खेत की उपयोग क्षमता में बढ़ोत्तरी:** रोपण करने में बहुत ही कम क्षेत्र में पौध तैयार कर सकते हैं, जिससे अधिक क्षेत्र में रोपण किया जा सकता है। इस समय में बाकी खेत में और अन्य फसल ले करके हम लोग खेत की उपयोग क्षमता में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं।
2. **लागत में कमी:** पौध की नर्सरी तैयार करने में लागत कम लगती है। क्योंकि शुरुआत में पौध की बढ़ोत्तरी कम होती है, यदि सीधी बुवाई करते हैं तो खरपतवार और रोग नियन्त्रण में अधिक लागत आयेगी। अतः यदि नर्सरी तैयार करते हैं तब कम क्षेत्र में पौध तैयार करने की लागत कम हो जाती है।
3. **कम बीज दर:** पौध तैयार करने में सीधी बुवाई की तुलना में कम बीज लगता है।
4. **सुगम और ठीक तरह से देख-भाल:** पौध का कम क्षेत्र होने के कारण पौध की सही और ठीक तरह से देख-भाल हो जाती है।
5. **समय से रोपण:** यदि खेत में कोई दूसरी फसल लगी है और उसकी कटाई में 30-45 दिन बाकी है तब आगे वाली फसल की पौध डालकर, इस फसल को उसी खेत की फसल कटने के बाद समय पर लगा सकते हैं।
6. **अच्छा बीज जमाव:** नर्सरी का कम क्षेत्र होने के कारण और सही देख-भाल से बीज का जमाव और बढ़ोत्तरी अच्छी होती है।
7. **पौध जीवितता में बढ़ोत्तरी:** नर्सरी में तैयार की गई पौध सीधी बुवाई की अपेक्षा अधिक अच्छी और स्वस्थ होती है, जिसके कारण इसकी जीवितता अधिक हो जाती है।



जिरेनियम



मेन्था



तुलसी



नीबू घास



कालमेघ



रोजमेरी



सर्पगन्धा



स्टीविया



अश्वगन्धा

सामान्य नाम	वानस्पतिक नाम	उन्नत प्रजाति	बीज दर	पौध सामग्री	रोपाई का समय व रोपाई दूरी	खाद उर्वरक	कटाई	उपज
जिरिनियम	पेलागोनियम ग्रेवियोलेंस	बोरवॉन, सिम-पवन	40000-50000 कटिंग/है0	कटिंग	नवम्बर 50X50 सेमी0	10 टन गोबर खाद, 120:80:60 किग्रा एन पी के/है0	120-130 दिन की फसल होने पर	25-30 किग्रा तेल/है0
मेन्था	मेन्था आरवेन्सिस	सिम-क्रान्ति, सिम-सरयू, कोसी	रोपाई 60-70 किग्रा/है0/सीधी बुवाई 200 किग्रा/है0	सर्कस	जनवरी-फरवरी 50X50 सेमी.	10 टन गोबर की खाद 100:50:50 किग्रा एन पी के/है0	100-120 दिन की फसल होने पर	160-200 किग्रा/है0
तुलसी	ऑसिमम बेसिलकम	सिम-सौम्या	1 किग्रा बीज/है0	बीज	जून-जुलाई 45X30 सेमी. से 50X50 सेमी.	5 टन गोबर की खाद, 120:60:60 किग्रा एन पी के/है0	100-110 दिन की फसल होने पर	100-150 किग्रा/है0
नीबू घास	सिम्बोपोगान पलेक्सुओसस	कृष्णा, चिरहरित, नीमा, सिम-स्वर्णा	55000-60000 रिल्प/है0	रिल्प	जून-जुलाई 45-60X30 सेमी.	5 टन गोबर की खाद 150:50:50 किग्रा एन पी के/है0	3-4 माह पर काटते रहना चाहिए 4-5 वर्ष तक	250 किग्रा तेल/है0/वर्ष
कालमेघ	एन्ड्रोप्रिफिश पेनिकुलाटा	सिम-मेघा	400-500 बीज/है0	बीज	जून-जुलाई 40-50X40-50 सेमी	5 टन गोबर की खाद 100:80:40 किग्रा एन पी के/है0	90-100 दिन की अवस्था पर	25-30 कुत्तल/है0 सूखा हर्ब
रोजमैरी	रोजमेरिनस आफिसिनलिस	सिम-हरियाली	40000-50000 कटिंग	कटिंग	अक्टूबर-नवम्बर 45-50X45-50 सेमी.	5 टन गोबर की खाद 120:80:60 किग्रा एन पी के/है0	3-4 माह पर काटते रहना चाहिए 3-4 साल तक	100-150 किग्रा तेल/है0/वर्ष शाक 100-150 कु0/है0
सर्पगंधा	राउल्फिया सर्पेन्दिना	सिम-शील	80-100 किग्रा/है0 ताजी जड़	ताजी जड़ कटिंग 5 सेमी के टुकड़े	जून-जुलाई 40-50 सेमी X 40-50 सेमी	10 टन गोबर की खाद 120:80:60 किग्रा एन पी के/है0	1.5-2 वर्ष की अवस्था पर	12-15 कु0/है0 सूखी जड़
स्टीविया मीठी पत्ती	स्टीविया रेबुडियाना	सीमैप-मीठी, सीमैप-मधु	10,00,00 से 1,20,000 कटिंग	कटिंग वनस्पति क कल्लों द्वारा	अक्टूबर-नवम्बर 30X30 सेमी	5 से 6 टन गोबर की खाद 100:40:40 किग्रा एन पी के/है0	2-3 माह के अन्तराल पर 1 साल तक पत्तियों की तुड़ाई	12-15 कुत्तल/है0

अश्वगंधा	विधानिया सोमनीफेरा	पोषिता, प्रताप, चेतक	रोपाई 5-6 किग्रा सीधी/बुवाई 12-15 किग्रा	बीज	जून-जुलाई 50X50 सेमी	5 टन गोबर की खाद 100:80:40 किग्रा एन पी के/हे०	6-8 माह बाद फरवरी-मार्च में जड़ की खुदाई	8 कुत्तल/हे० सूखी जड़
----------	-----------------------	-------------------------	--	-----	-------------------------	---	--	--------------------------

(विभिन्न औषधीय पौधों की रोपण/सस्य तकनीक)

संदर्भ

1. औस ज्ञान्या 2012 सी.एस.आई.आर. केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान, लखनऊ।
2. मेन्थाल मिन्ट की खेती हेतु नवीन कृषि पद्धति 2013, सी.एस.आई.आर. केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान, लखनऊ।
3. औषधीय एवं सगंध पौधों के उत्पादन एवं प्रसंस्करण की उन्नत प्रौद्योगिकी पर कौशल-सह-तकनीकी कार्यक्रम, 27-29 सितम्बर 2014, सी.एस.आई.आर. केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान, पन्तनगर, उत्तराखण्ड।